सूक्ष्म शरीर और ऊर्जा के चक्र

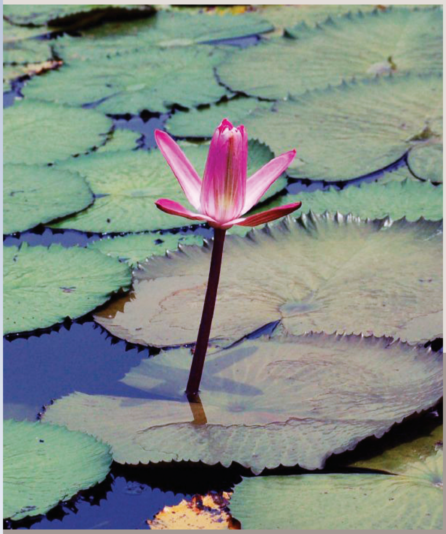

एक मां के पेट में एक अणु गया है, उस अणु में वह सब लिखा हुआ है जो आप में संभव होगा। वह उस अणु में कहां लिखा हुआ है? अभी तक वैज्ञानिक की पकड़ के बाहर है, लेकिन आध्यात्मिक या योग का कहना यह है कि उसमें जो प्राण प्रविष्ट हुआ है, उस प्राण की जो वासना है, वह वासना कोड है। उस कोड से सब विकसित होगा

प्रश्न : मुझे एक बात पूछनी है : प्राणी का सूक्ष्म शरीर और आदमी का एक ही समान होता है?

प्राणी यानी?

कोई भी जानवर, जैसे गाय...

नहीं, एक सा नहीं होता, अलग-अलग होता है।

प्रश्न : अलग सूक्ष्म शरीर होने से चक्र अलग रहते हैं दोनों के?

नहीं, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, सूक्ष्म शरीर जो है आपका, अगर मनुष्य हैं, तो जैसा आपका शरीर है, ठीक इसी आकृति का, ठीक ऐसा लेकिन अत्यंत एस्ट्रल एटम्स का बना हुआ, बहुत सूक्ष्म पदार्थों का बना हुआ शरीर होगा। उसके आर-पार जाने में कठिनाई नहीं है। अगर हम एक पत्थर फेंकें तो वह उसके आर-पार हो जाएगा। वह सूक्ष्म शरीर अगर दीवाल से निकलना चाहे तो निकल जाएगा, उसमें कोई बाधा नहीं है। लेकिन आकृति बिलकुल यही होगी जो आपकी है। धुंधली होगी, जैसा धुंधला फोटोग्राफ हो। अगर आपके सूक्ष्म शरीर का फोटोग्राफ होगा तो वह

बिलकुल इससे मेल खाएगा। लेकिन ऐसा खाएगा जैसे कि कई सैकड़ों वर्ष में पानी पड़ते-पड़ते एकदम धुंधला हो गया हो। पर होगा यही।

गाय का होगा तो गाय जैसा होगा। लेकिन गाय जब मनुष्य शरीर में प्रवेश करेगी, तो सूक्ष्म शरीर चूंकि इतना वायवीय है, वह किसी भी आकृति में फौरन ढल सकता है। वह कोई ठोस चीज नहीं है।

जैसे हम गिलास, पच्चीस ढंग के गिलास रखें और पानी को एक गिलास में डालें तो पानी उस आकृति का हो जाता है, दूसरे गिलास में डालें, दूसरी आकृति का हो जाता है। क्योंकि पानी लिक्विड है, उसका कोई ठोस आकार नहीं है, वह जिस गिलास में होता है उसी आकार का होता है। तो वह जो सूक्ष्म शरीर है, वह जिस प्राणी-जीवन में प्रवेश करता है उसी आकार का हो जाता है। उसमें आकार का ठोसपन नहीं है। इसलिए अगर गाय का सूक्ष्म शरीर निकल कर मनुष्य में प्रवेश करेगा, तो वह मनुष्य की आकृति ग्रहण कर लेगा। और सूक्ष्म शरीर की जो आकृति है, वह डिजायर से पैदा होती है, वह वासना से पैदा होती है। तो जिस जीवन में प्रवेश की वासना पैदा हो जाएगी, सूक्ष्म शरीर उसी का आकार ले लेगा।

और अगर हम अपने इस शरीर पर भी प्रयोग करें तो हम बहुत हैरान हो जाएंगे! यह शरीर भी बहुत कुछ आकृतियां हमारी वासना से ही लेता है।

अभी तो वैज्ञानिक भी इस बात को समझने में असमर्थ हैं कि हम खाना खाते हैं, तो उसी खाने से हड्डी बनती है, तो उसी खाने से खून बनाता है, उसी खाने से हाथ की चमड़ी बनती है, उसी खाने से आंख की अंदर की चमड़ी भी बनती है।लेकिन आंख की चमड़ी देखती है और हाथ की चमड़ी नहीं देखती। और कान की हड्डी सुनती है और हाथ की हड्डी नहीं सुनती। और जो तत्व हम ले जाते हैं वे एक ही हैं। और इतना सारा का सारा निर्माण भीतर जो पैदा होता है, यह किस आधार पर हो रहा है? तो वह जो हमारे भीतर जो गहरी वासना है, वह वासना आकृति देती है। और उस वासना का सूक्ष्मतम रूप, अब वे कहते हैं कि जरूर किसी कोड लैंग्वेज में कहीं न कहीं लिखा होगा।

जैसे एक बीज है, उस बीज को हम डाल देते हैं। फोड़ कर देखें तो हमें कुछ पता नहीं चलता। उस बीज को हम मिट्टी में डालते हैं और उसमें से एक फूल निकलता है, समझो सूर्यमुखी का फूल निकलता है। तो सूर्यमुखी के फूल में जितनी पंखुड़ियां हैं, इसका कुछ न कुछ कोड लैंग्वेज में उस बीज में लिखा हुआ होना चाहिए। अन्यथा यह कैसे संभव है कि यह सूर्यमुखी का ही पौधा बनता है, यह दूसरा पौधा नहीं बन जाता! बीज में किसी न किसी तरह, किसी न किसी सूक्ष्म तल पर, जो होने वाला है, वह सब लिखा होना चाहिए

एक मां के पेट में एक अणु गया है, उस अणु में वह सब लिखा हुआ है जो आप में संभव होगा। वह उस अणु में कहां लिखा हुआ है? अभी तक वैज्ञानिक की पकड़ के बाहर है, लेकिन आध्यात्मिक या योग का कहना यह है कि उसमें जो प्राण प्रविष्ट हुआ है, उस प्राण की जो वासना है, वह वासना कोड है। उस कोड से सब विकसित होगा। और वह जो सूक्ष्म शरीर है, जब तक एक ही तरह की जीवन-यात्रा करेगा—जैसे दस जन्म होंगे आदमी के, तो वह आदमी का रहेगा। लेकिन हर जन्म में उसकी आकृति बदलती चली जाएगी। और वह आकृति भी आपकी वासना से ही निर्धारित होगी।

प्रश्न : सूक्ष्म शरीर के साथ चक्र जाते हैं कि नहीं जाते?

चक्र न! हां, चक्र तो जो असल में गौर से समझें, तो सूक्ष्म शरीर और इस स्थूल शरीर के बीच जो कांटैक्ट फील्ड हैं, उनका नाम चक्र है। यानी आपका यह शरीर और वह शरीर जहां-जहां छूता है, वे चक्र हैं। तो वे सब समान हैं, उसमें कोई फर्क नहीं पड़ता।

प्रश्न : प्राणी में और ...

सब में। जहां से गाय का शरीर छुएगा, वहां चक्र बन जाएगा। और वे छूने के स्थल तय हैं। जैसे समझ लें कि सेक्स के सेंटर पर एक चक्र होगा। चाहे वह किसी जाति का प्राणी हो—कुत्ता हो, बिल्ली हो, आदमी हो, औरत हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता—एक बहुत फोर्सफुल चक्र सेक्स के सेंटर पर होगा। तो वह चक्र सब शरीरों में होगा, उनकी आकृति कुछ भी हो, उस जगह चक्र होगा। हां, वह चक्र छोटा-बड़ा हो सकता है, कमजोर-ताकतवर हो सकता है।

प्रश्न : सात चक्र होते हैं?

हां, सात चक्र होंगे।

(प्रश्न का ध्वनि-मुद्रण स्पष्ट नहीं।)

हां-हां, समझा। तो उसका मतलब केवल इतना है कि उनके बाकी चक्र निष्क्रिय पड़े हुए हैं। वे जब भी सक्रिय हो जाएंगे, उनकी उतनी इंद्रियां प्रकट होने लगेंगी। चक्र निष्क्रिय हो सकते हैं। और हमारे भीतर भी सात चक्र होते हैं, लेकिन

कोई भी आदमी बहुत श्रम से गुजरना नहीं चाहता, और ऐसी चीजों के लिए जो बहुत साफ-साफ दिखाई न पड़ती हों। धन दिखाई पड़ता है तो आदमी श्रम कर लेता है। यश दिखाई पड़ता है तो आदमी श्रम कर लेता है; पद दिखाई पड़ता है तो आदमी श्रम कर लेता है। धर्म का मामला ऐसा है, दिखाई बिलकुल नहीं पड़ता और श्रम की बहुत मांग है इसमें

सातों सक्रिय नहीं होते। सातों सक्रिय हो जाएं तो बहुत अदभुत घटना घट गई। हमारे भी सातों सक्रिय नहीं होते। आमतौर से सौ आदमियों की जांच-पड़ताल करेंगे, तो सेक्स का चक्र तो सब में सक्रिय मिलेगा, बाकी छह चक्रों में से कोई एकाध चक्र किसी में सक्रिय होगा, किसी में दो चक्र सक्रिय होंगे, नहीं तो नहीं होंगे।

प्रकृति को तो जितने चक्र सक्रिय उसने बनाए हैं, वे तो सक्रिय रहते हैं। लेकिन जितने साधना से सक्रिय होते हैं, वे नहीं सक्रिय होते, वे हैं हमारे भीतर, लेकिन वे निष्क्रिय पड़े होंगे। जैसे कि बिजली का बटन तो है, बल्ब भी है, लेकिन बटन ऑफ है, तो बल्ब बंद पड़ा हुआ है; वह ऑन हो जाए तो बल्ब जल जाए। चक्र पूरी तरह मौजूद हैं, लेकिन ऑन हालत में नहीं हैं, ऑफ हालत में हैं।

तो हमारे जितने श्रेष्ठतर चक्र हैं, वे सब ऑफ हालत में हैं। और ध्यान से और योग से उनको ऑन हालत में लाने की ही सारी चेष्टा की जाती है कि वे ऑन हो जाएं और वे सक्रिय हो जाएं। और जितने ऊपर के चक्र सक्रिय होने लगते हैं, उतने नीचे के चक्र अपने आप निष्क्रिय होने लगते हैं। क्योंकि जो शक्ति है हमारे पास वह वही है, वह धीरे-धीरे ऊपर के चक्रों में गतिमान हो जाती है, नीचे के चक्र शिथिल हो जाते हैं।

इस पर कभी पूरी बात करनी अच्छी होगी। कभी मैं चाहता हूं कि पूरी एक सीरीज लेक्चर्स की इस पर हो सके तो अच्छा हो।

प्रश्न : गुजरात में दिया था आपने एक लेक्चर इस पर।

बहुत बात करने जैसी है, बहुत बात करने जैसी है। क्योंकि मामला इतना आसान नहीं है जितना आमतौर से समझा जाता है। काफी जटिल है पीछे।

प्रश्न : पिछले जन्मों में जाने के लिए जो आपने बात कही, उसके लिए कैसे प्रयोग करना होगा, आउटलाइन दी जा सकती है?

नहीं, वह तो आप जाएं तो करवा ही दूं, आउटलाइन जरा मुश्किल बात है। न, आउटलाइन से काम नहीं होगा। और

आउटलाइन दी भी नहीं जा सकती है। वह तो आप एक स्टेप पूरा करें तो दूसरे की आउटलाइन दी जा सकती है। और नहीं तो आप परेशानी में पड़ जाएं, उससे कुछ मतलब नहीं है। और कुछ से कुछ कर लें, उससे कुछ मतलब नहीं होगा। वह तो एक स्टेप पूरा हो जाए तो दूसरे स्टेप की बात करना सार्थक है।

यह पासिबल है, यह उससे खयाल में आ सके। जैसे एक वैज्ञानिक प्रयोग करता है, तो सब लोग घर में प्रयोग नहीं करते। लेकिन वे जो डिस्क्राइब करते हैं उससे ऐसा मालूम होता है कि ऐसा हो सकता है।

इसमें दोनों में बुनियादी फर्क हैं। यह वैज्ञानिक प्रयोग नहीं है उस अर्थों का; क्योंकि विज्ञान और धर्म के प्रयोग में जो बुनियादी फर्क है वह यह है कि विज्ञान का प्रयोग ऑब्जेक्टिव है।

एक बिजली का पंखा किसी ने बनाया। तो जिसने बनाया उसी को पंखा दिखता है, ऐसा नहीं है; जिन्होंने नहीं बनाया, वे सिर्फ देखने आकर खड़े हो गए हैं, उनको भी पंखा दिखता है; चलाएगा तो चलता हुआ भी दिखता है। वे मानते हैं कि ठीक है, पंखा चलता है, हवा भी फेंकता है।

विज्ञान जो प्रयोग कर रहा है वह ऑब्जेक्ट के साथ कर रहा है और धर्म जो प्रयोग कर रहा है वह सब्जेक्ट के साथ कर रहा है। मैंने अपने साथ जो प्रयोग किए हैं वे आपको किसी हालत में नहीं दिख सकते। कोई कारण नहीं दिखने का। सच तो यह है कि मेरे शरीर से ज्यादा आपको मेरे भीतर कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता है। कैसे दिखाई पड़ेगा? शरीर ऑब्जेक्ट है। लेकिन मैं तो कभी आपके लिए ऑब्जेक्ट नहीं हो सकता; न आप मेरे लिए ऑब्जेक्ट हो सकते हैं। और धर्म के सारे प्रयोग सब्जेक्ट से जुड़े हुए हैं, वह जो भीतर है उससे।

तो अगर एक महावीर या एक बुद्ध कितने ही प्रयोग कर लें, फिर भी बाहर अगर लाकर, महावीर को बिठा दिया जाए सामान्य कपड़ों में, आपके बीच, आपको पता भी नहीं चलेगा यहां महावीर बैठे हुए हैं। क्योंकि जो घटना घटी है वह इतनी आंतरिक है, इतनी भीतर है कि वह सिर्फ महावीर के लिए ही साक्षात् हो सकता है उसका। उसका साक्षात बाहर से नहीं हो सकता। और बाहर से भी एक स्थिति में हो सकता है कि ठीक वैसी घटना आपके भीतर भी घटी हो, तो कोई भीतरी पहचान हो सकती है कि महावीर की आंख में आपको वह बात दिखाई पड़ने लगे जो आपकी अपनी आंख में आपको अनुभव होती है। महावीर के चलने में आपको वह बात दिखाई पड़ने लगे जो आपके चलने में फर्क पड़ गया है। तो शायद आपको थोड़ा अंदाज लगे कि इस आदमी के भीतर भी कुछ वैसी बात तो नहीं हो गई जैसी मेरे भीतर हो गई है! नहीं तो अन्यथा बिलकुल मुश्किल मामला है।

और रूप-रेखा की भी जो बात है, कि एक आउटलाइन भी दी जा सके। आउटलाइन देना भी बिलकुल मुश्किल है ।क्योंकि मामला ऐसा है, समझ लीजिए कि पहली कक्षा में एक विद्यार्थी भर्ती हुआ है और वह कहता है कि थोड़ी-बहुत हमें मैट्रिक की आउटलाइन दे दी जाए, तो हमें पहली कक्षा में पढ़ने में थोड़ी सुविधा हो। तो उससे शिक्षक कहेगा कि चूंकि तुम पहली कक्षा से ही परिचित नहीं हो, मैट्रिक की आउटलाइन का कोई मामला ही नहीं उठता। क्योंकि वह हम कैसे तुम्हें देंगे? और तुम कैसे जानोगे? क्या करोगे तुम उसे जान कर? तुम पहचान भी नहीं सकते हो उसको। क्योंकि जिस भाषा में वह आउटलाइन दी जाने

वाली है, वह भाषा तुम जब इन कक्षाओं से गुजरो तब तुम्हारे पास होगी। वह आउटलाइन भी जो दी जाने वाली है...

समझ लीजिए कि एक पांच साल, सात साल का बच्चा है, इसको अगर सेक्स के संबंध में समझाने बैठा जाए, तो बहुत कठिनाई हो जाने वाली है। क्योंकि यह बच्चे के पास कोई भीतरी भूमिका नहीं है जिससे सेक्स की भाषा यह समझ सके। इसके लिए कोई सवाल नहीं उठता कि यह कैसे समझे? आप क्या कह रहे हैं, यह कैसे समझे? आप आउटलाइन भी दे देंगे।, तब भी इसको ऐसा लगेगा कि न मालूम किस लोक की बात की जा रही है जिससे मुझे कोई पहचान नहीं है! क्या कहा जा रहा है यह?

तो जितने गहरे सत्य हैं भीतर के, उनकी बिलकुल प्राथमिक बात की जा सकती है, बिलकुल प्रारंभ की, बिलकुल शुरू की। और एक-एक भी नहीं हैं, सामने आ जाएं। तो उनको एक-एक कदम करना ही उचित है।

प्रश्न : मेरा खयाल है कि जैसे आपने कहा कि वह रात को पंद्रह मिनट—मैं कौन हूं?...इससे आगे कुछ आप कहेंगे, ऐसा खयाल के लिए।

वह भी नहीं कहता न कोई! वह भी नहीं कहता कोई पंद्रह मिनट बैठ कर, वह भी कोई नहीं कहता। वह भी मैं कहता हूं तब एकाध-दो दिन कोई बैठ कर कर लेता है। वह भी नहीं कहता कोई। क्योंकि अगर वह भी एक दो-तीन महीने कोई श्रमपूर्वक कहे, तो उसकी पूरी की पूरी जिज्ञासा बदल जाएगी फौरन। वह जो प्रश्न पूछेगा वे दूसरे ही होने वाले हैं, जो आप पूछ ही नहीं सकते। क्योंकि उसे कुछ चीजें दिखाई पड़नी शुरू होंगी जिनके बाबत वह पूछना शुरू करेगा, जो आप कभी पूछ ही नहीं सकते। यानी आदमी क्या साथ आगे मेहनत की जानी जरूरी है। तो उधर सोचता हूं।

(प्रश्न का ध्वनि-मुद्रण स्पष्ट नहीं।)

हां, कारण हैं लगने के, कारण हैं लगने के। बड़ा कारण तो यह है कि एक तो हजारों साल से ऐसा समझाया जा रहा है कि किसी की कृपा से हो जाएगा; कोई कर देगा तो हो जाएगा; कोई गुरु मिल जाएगा तो कर देगा। हजारों साल से यह समझाया जा रहा है कि कोई कर देगा, हो जाएगा; आपको कुछ करना नहीं है। यह मन में बैठ गया है गहरे, एक।

दूसरी बात यह है कि कोई भी आदमी बहुत श्रम से गुजरना नहीं चाहता, और ऐसी चीजों के लिए जो बहुत साफ-साफ दिखाई न पड़ती हों। धन दिखाई पड़ता है तो आदमी श्रम कर लेता है। यश दिखाई पड़ता है तो आदमी श्रम कर लेता है; पद दिखाई पड़ता है तो आदमी श्रम कर लेता है।

तो हमारे जितने श्रेष्ठतर चक्र हैं, वे सब ऑफ हालत में हैं। और ध्यान से और योग से उनको ऑन हालत में लाने की ही सारी चेष्टा की जाती है कि वे ऑन हो जाएं और वे सक्रिय हो जाएं। और जितने ऊपर के चक्र सक्रिय होने लगते हैं, उतने नीचे के चक्र अपने आप निष्क्रिय होने लगते हैं

कदम उनमें गति हो, तो आगे के एक-एक कदम की बात आगे की जा सकती है। और एक सीमा के बाद उसकी पूरी बात की जा सकती है। नहीं तो नहीं की जा सकती।

और हमारी कठिनाई यह है कि हम में से प्रयोग करने के लिए बहुत कम लोग हिम्मत जुटा पाते हैं। और कुछ बातें ऐसी हैं जो बिना प्रयोग के कभी अनुभव में आ ही नहीं सकती हैं। छोटा-मोटा प्रयोग ही करना हमें मुश्किल गुजरता है। और ये सब प्रयोग तो जिसको हम कहें टोटल डिस्टरबेंस पैदा करने वाले हैं। आपकी पूरी की पूरी जिंदगी अपरूटेड हो जाए, और तरह की हो जाए। क्योंकि कुछ चीजें आपको पता ही नहीं जो दिखाई पड़ें; और कुछ चीजें जो आपने कभी सोची पूछता है, यह देख कर मैं कह सकता हूं कि वह कहां है। क्योंकि पूछेगा वही न जहां वह सोच रहा है, जहां सारा चित्त खड़ा हुआ है।

वह भी कोई नहीं फिकर करता कि वह कोई तीन-चार महीने भी ताकत लगा कर कर ले। उतना भी नहीं हो रहा है। वह भी थोड़ा सा हो तो आगे बात की जा सकती है, जरूर की जा सकती है।

और अब मैं इधर चुनाव कर रहा हूं कि कुछ कैंप में बुलाना चाहूंगा जिनमें कुछ लोगों को मैं निमंत्रण करूंगा कि वे आ जाएं। कोई भी नहीं आ सकेगा, जिसको मैं बुलाऊंगा वही आ जाए। तो मेरी नजर में वे कुछ लोग आने शुरू हुए हैं, जो थोड़ा काम कर रहे हैं। और उन थोड़े लोगों के धर्म का मामला ऐसा है, दिखाई बिलकुल नहीं पड़ता और श्रम की बहुत मांग है इसमें—कि इतना श्रम करो तो कुछ होगा, इतना श्रम करो तो दिखाई पड़ेगा कुछ।

तो अदृश्य के लिए श्रम जुटाने की क्षमता थोड़े लोग ही कर सकते है।। दृश्य के लिए श्रम जुटाना बहुत आसान बात है।

फिर चारों तरफ, हमारे चारों तरफ जो लोग कर रहे हैं, वही हम करते हैं। क्योंकि हम आमतौर से खुद कुछ नहीं करते, जो हमारे चारों तरफ हो रहा है, उसका हम अनुकरण करते हैं। जैसे कपड़े लोग पहन रहे हैं, हम पहन लेंगे; जो लोग पढ़ रहे हैं, वह हम पढ़ेंगे; जिस पिक्चर को वे देख रहे हैं, हम देखेंगे। चारों तरफ से

हमारे चित्त के जो तार हैं, वे जिस तरफ खींचे जाते हैं, वहां खिंचते हैं। जैसे कि अगर हिंदुस्तान में आप पैदा हुए, तो आप और तरह के काम करेंगे; और अगर आप जापान में पैदा हुए, तो और तरह के; और फ्रांस में पैदा हुए, तो और तरह के। जो वहां की हवा है, चारों तरफ जो हो रहा है।

बुद्ध और महावीर जैसे लोगों ने दस-दस हजार भिक्षु इकट्ठे किए। और इकट्ठे करने का कारण यह नहीं था कि दस हजार इकट्ठा करने से कोई फायदा है।

सिर्फ उपयोग इतना था कि आम आदमी दस हजार के बीच फौरन सक्रिय हो जाता है। जो अकेले में हो ही नहीं सकता वह। जब दस हजार भिक्षु साधना में लगे हों और दस हजार भिक्षु सुबह से सांझ तक सिर्फ साधना की बात कर रहे हों, जहां दस हजार भिक्षु सुबह से सांझ तक आत्मिक अनुभवों की बात कर रहे हों, वहां आप अगर पहुंच गए, तो बहुत असंभव है कि आप इस धारा में प्रविष्ट होने से बच जाएं, आप इसमें डूब जाने वाले हैं।

तो बड़े आश्रमों का और बड़े प्रतिष्ठानों का उपयोग सिर्फ इतना था कि वहां की पूरी की पूरी हवा—जैसे कि संसार की पूरी की पूरी हवा सांसारिक है और आप यहां वही करने लगते हैं जो दूसरे कर रहे हैं—ठीक वहां की पूरी हवा आध्यात्मिक हो और आप वहां वही करने लगें जो वहां चारों तरफ हो रहा है। और एक दफा थोड़ी सी गति हो जाए, तब तो इतना रस आने लगता है कि फिर कोई मतलब नहीं है कि कौन कर रहा है कि नहीं कर रहा है। आपका अपना आनंद ही आपको खींचने लगता है। लेकिन पहला स्टेप उठ जाए, उसकी जरूरत है।

और इधर जितना लंबा फासला हुआ है उतना आदमी को ऐसा लगने लगा है कि अध्यात्म...पता नहीं! कहीं मुट्ठी में तो पकड़ में आता नहीं कि क्या है? कौन झंझट में पड़े? और एक-दो दिन में भी मुट्ठी में पकड़ आ जाए तो भी कोई झंझट में पड़ जाए। हमारे जन्मों-जन्मों की यात्रा प्रतिकूल है और उलटे संस्कार इकट्ठे हैं। उनको पार किए बिना, उनको तोड़े बिना कहीं गति हो नहीं सकती। इतना लंबा और कठिन दिखाई पड़ता है कि फिर आदमी सोचता है—ठीक है। सुन लो, बात कर लो, पढ़ लो; इससे ज्यादा झंझट में पड़ने का नहीं।

अब एक बहुत अच्छे आदमी हैं, विनोबा जी के खास साथियों में से हैं। वे कई बार मेरे पास आते थे, अब बूढ़े हो गए हैं, तो उनसे मैंने कहा कि अब बातचीत आप बहुत कर चुके। वे गांधी जी के साथ जीवन भर रहे, विनोबा जी के साथ रहे, अरविंद आश्रम रहे, रमण के यहां...सब, हिंदुस्तान में इधर पचास सालों में जो भी कुछ हुआ होगा, वे सब परिचित हैं, सब जगह रहे हैं। तो बातचीत आप बहुत कर चुके, अब कुछ करिएगा, क्योंकि अब उम्र बहुत हो गई। तो उनसे मैंने कहा कि एक इक्कीस दिन का मैं प्रयोग आपको बताता हूं, पहले आप यह करके आइए, फिर मैं आगे बात करूं। नहीं तो बेकार है; आप तो इतने लोगों से बात कर चुके हैं कि अब कोई मतलब है नहीं इसमें।

वे मेरा पूरा प्रयोग समझे और मुझसे बोले, यह तो मैं करूंगा नहीं क्योंकि इसमें तो मैं पागल हो जाऊंगा।

तो मैंने उनसे कहा कि अब मरने के करीब हैं आप; वर्ष, दो वर्ष, कितने दिन जिंदा रहेंगे, यह नहीं कहा जा सकता। इतनी हिम्मत कर लीजिए! पागल-वागल नहीं हो जाएंगे। पागल आप हैं! जो आदमी पचास साल से निरंतर अध्यात्म की बातें सुनता हुआ घूम रहा है और एक प्रयोग नहीं किया, वह आदमी पागल नहीं तो और क्या है? घूमो ही मत फिर ऐसा है तो।

पर वे कहने लगे, नहीं, यह मैं नहीं कर सकता हूं। यह तो आपका पूरा प्रयोग मैंने समझा, इसमें सात दिन के बाद ही मैं वापस लौटने वाला नहीं हूं, मैं तो गया।

उस दिन से वे फिर मुझसे जिज्ञासा करने भी नहीं आए, क्योंकि उन्होंने कहा कि...वे समझ गए कि मैं कहूंगा कि वह करिए, फिर आगे बात होगी, नहीं तो बात नहीं होगी।

जिज्ञासा बौद्धिक हो गई, बिलकुल इंटलेक्चुअल है। एक आदमी आकर पूछ लेता है: ईश्वर है या नहीं? उसे कोई मतलब भी नहीं है। हो तो ठीक है, न हो तो ठीक है। इतना भी मतलब नहीं है। पूछने में भी कोई सार नहीं है।

अभी गुरजिएफ था एक फकीर फ्रांस में। तो जो भी आदमी आएगा, जिज्ञासा करने के पहले, उसे बड़े उपद्रवों में से गुजारेगा वह। और जब वह उतनी हिम्मत दिखाने को राजी हो जाए तो जिज्ञासा कर सकता है, नहीं तो नहीं करने देगा। वह कहेगा कि फिजूल जिज्ञासा से कोई मतलब तो है नहीं।

इधर मैं भी जो इतनी बात करता हूं, वह इसी खयाल से करता चला जाता हूं कि इसमें से कुछ लोग ठीक जिज्ञासा पर आ जाएंगे। हजार आदमी पूछते हैं, कोई एक आदमी करने को राजी होगा। तो एक दो-तीन वर्ष घूमता रहूंगा और, और फिर मेरी नजर में लोग आते जाते हैं, उन लोगों को बुला कर जो करना है वह कर लूंगा। फिर एक कोने पर बैठ जाऊंगा, फिर जिसको करना हो वह वहां आ जाए।फिर मुझे कुछ भटकने की जरूरत नहीं, कोई प्रयोजन नहीं।

और इतना ध्यान रहे कि करेंगे तो ही कुछ होगा, किसी के करने से कुछ होने वाला नहीं है। पर न साहस है, न इच्छा है। कोई कामना भी नहीं है वैसी। और ऐसा खयाल बनता है कि सब कुछ करते हुए, कभी घड़ी आधा घड़ी इस तरह की बातें भी कीं तो अच्छा है। इससे ज्यादा नहीं है कुछ।

—ओशो
जीवन रहस्य
प्रवचन नं. 07 से संकलित
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है।)